HARI-HAR SEEDS BUMPER YIELDS
HARI-HAR SEEDS

HARI-HAR®
SEEDS

शिव गंगा हाइब्रिड सीड्स प्रा.लि.

राम भवन, सामने सुशीला भवन, बालसमन्द रोड़, हिसार-125001 (हरियाणा) / दूरभाष नं. 70159-27772

धान फसल उत्पादन की समग्र सिफारिशें

चावल भारतीय थाली का मुख्य भोजन है। इसमें शर्करा की अधिकता होती है। धान सुगम, पाच्य एवं लजीज भोजन है। बासमति सुगन्धित धान अधिक सुपाच्य एवं स्वादिष्ट होता है। बासमति धान में 2 एसिटिलिन 1- PYRAZOLINE 2- AP के कारण खुशबू होती है। उत्तम उत्पादन लेने के लिये निम्न सिफारिशें उपयोगी हैं :-

भूमि का चुनाव :-

धान की फसल के लिये चिकनी तथा चिकनी दोमट मिट्टी उत्तम होती है क्योंकि इसमें पानी को संग्रहित करने की क्षमता होती है। दोमट भूमि धान के लिये उत्तम है धान की फसल 5 से 9 PH मान तक की भूमि में उगाया जा सकता है।

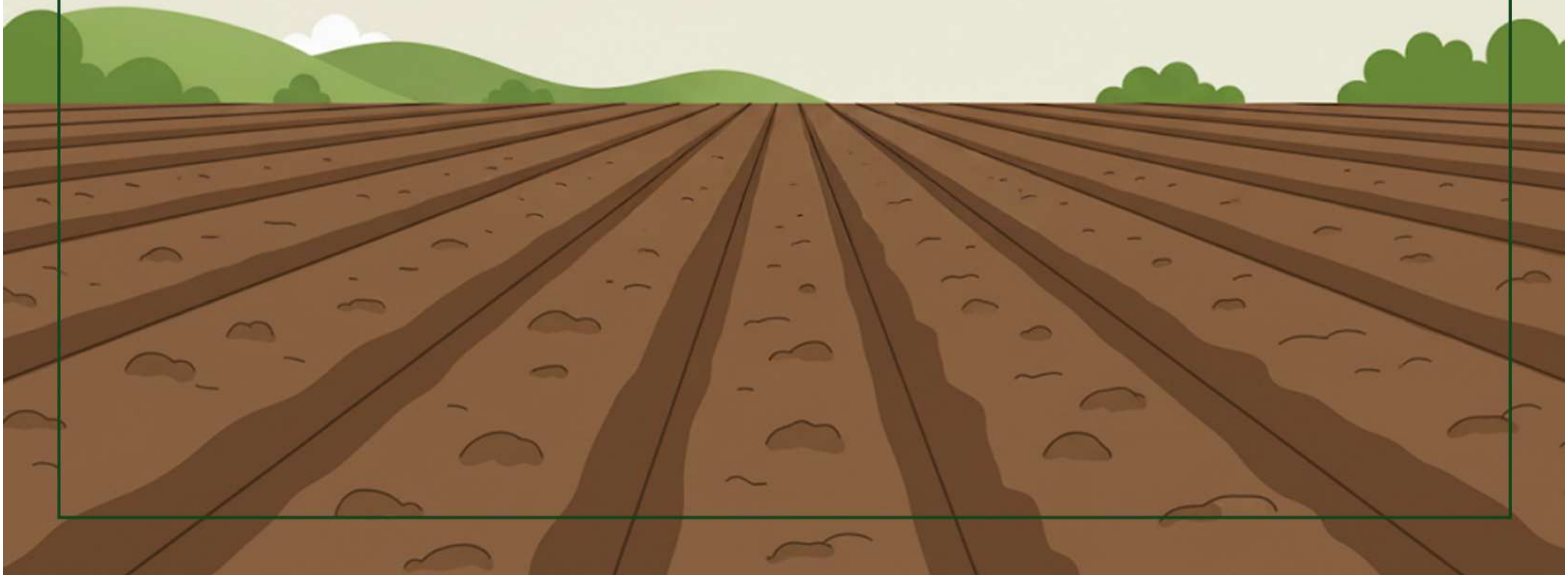

भूमि की तैयारी :-

मई में खेत को भूमि पलटने वाले हल (SOIL TURNING PLOUGH) से कर के दो-तीन जुताई टिलर से ट्रैक्टर द्वारा करें। भूमि घास पात मुक्त हो आवश्यक खाद एवं उर्वरक की मात्रा जुताई के साथ खेत में मिला दें।

HARI-HAR SEEDS

नर्सरी की बिजाई :-

धान की बासमति, असुगंधित तथा संकर किस्मों की नरसरी 15 मई से 7 जुलाई तक उत्तम समय है। एक एकड़ धान की बिजाई के लिये 18X3 मीटर की 5 क्यारियाँ थोड़ी धरातल से उठा कर बनाएं।

खाद एवं उर्वरक :-

खेत तैयार करते समय 600 क्विंटल गोबर का खाद दें। गोबर की खाद न हो तो हरी खाद ढेंचा दें। इसके अलावा भूमि स्वास्थ्य कार्ड (SOIL HEALTH CARD) के अनुसार खाद /उर्वरक दें। यदि उपरोक्त न हो तो उर्वरक की अनुमोदित मात्रा 50 KG नाइट्रोजन (130 KG यूरिया) ए 24 KG फोसफोरस (150 KG सिंगिल सुपर फास्फेट) तथा 24 KG पोटाश (40 KG MOP एवं 10 KG 21% ZINC) तथा बासमति किस्मों में 36 KG नाइट्रोजन (60 KG यूरिया), 12 KG फोसफोरस (72 KG सिंगिल सुपर फास्फेट) तथा 10 KG ZINC 21% का प्रयोग करें। नाइट्रोजन की 1/3 भाग तथा फोसफोरस, पोटाश तथा ZINC की पूरी मात्रा खेत की तैयारी के समय दें। धान में नाइट्रोजन को अमोनिया के रूप में ज्यादा मानती है। धान में 2/3 भाग यूरिया रोपाई के एक माह बाद तथा पुनः एक माह बाद डालें।

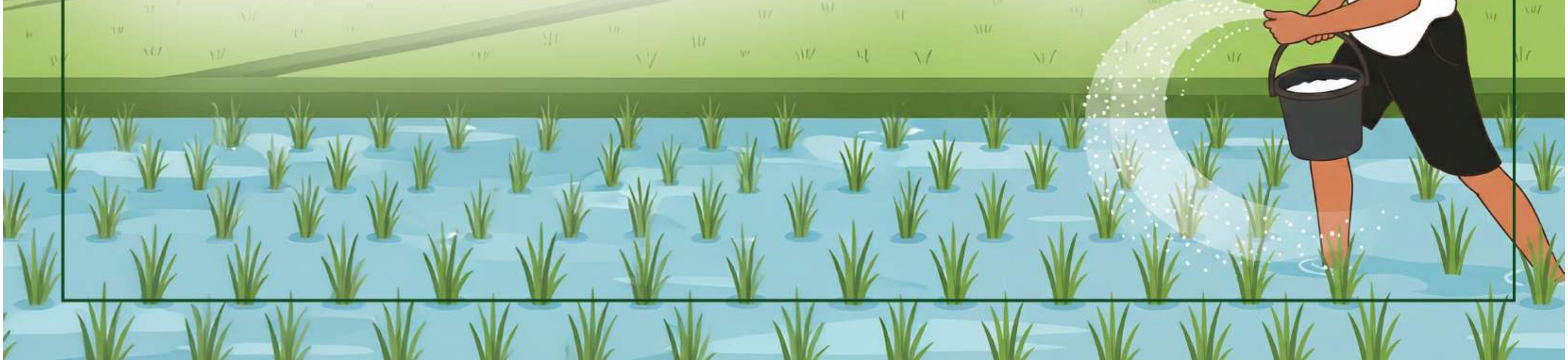

बीज की मात्रा :-

बासमति एवं संकर किस्मों के लिये 8 KG/एकड़ एवं असुगन्धित/परमल किस्मों का 12 किलो बीज वापरे।

बीजोपचार :-

बीज को 10 लीटर पानी में एक किलो नमक डाल कर घोल बना लें और उसमें 2-3 KG बीज डाल कर बारी-बारी से हल्का बीज निथार लें। प्रोसेस टी. एल. और प्रमाणित बीज में यह आवश्यक नहीं। बिजाई से पूर्व धान बीज को 5 ग्राम एमिशान + 1 ग्राम स्ट्रैपटोसाईक्लीन के 10 KG घोल में डाल कर सुखा कर बिजाई करें।

किस्म :-

बासमति धान की किस्मों में मुख्य PB-1121 PUSA SUGANDH 4 (2005), PB-6 (PUSA-1401) (2010), CSR-30 (2001), PB-1509 (2013), PB-1718 (2017), पंजाब बासमति 4 (2018), PUNJAB BASMATI 5 (2018), PB-1692 (2020), PB-1847 (1509), PB-1885 (PB-1121), PB-1886 (PB-6)

परमल समूह :- PR-114 (1999), PR-111 (1984), PR-115 (2000), PR-126, PR-129, PR-130, PR-131, PR-132, BPT-5204, SARVAGYA-108.

HARI-HAR SEEDS

रोपाई का तरीका :-

बिजाई से पूर्व खेत में पानी भर कर पडलर या रोटावेटर से कदू कर लें। पौध उखाड़ने से एक दिन पहले नरसरी में पानी भर देना चाहिए जिससे पौध उखाड़ते समय जड़ें न टूटे। 25-30 दिन की पौध उखाड़कर धोकर 10-15 मिनट इस घोल में रखें और तब दो-दो पौधे एक जगह बासमति किस्मों को 20 X 15 सें.मी. तथा नॉन-बासमति 15 X 15 सें.मी. की दूरी पर लगा दें। इस प्रकार एक एकड़ धान में बासमति किस्मों में 1,33,000 पौधे (33 पौधे प्रति वर्ग मीटर) तथा परमल किस्मों में 1,73,000 पौधे यानि (44 पौधे प्रति वर्ग मीटर) हो जाते हैं।

HARI-HAR SEEDS

खरपतवार नियंत्रण :-

धान खरपतवार नियंत्रण हेतु निम्न रसायनों के साथ नियंत्रित किया जा सकता है :-

क्र.सं.	रसायन का नाम	लगाने की विधि
1.	12 KG. ब्यूटाक्लोर (मैचैटी), डेलक्योर मिलक्योर	60 किलोग्राम रेत में पौधा लगाने के 2-3 दिन बाद एक बार खेत में फैला दें।
2.	थायोबैन कर्व सैटर्न दानेदार 12 KGS/ACRE	- DO -
3.	पैन्डामैथेलीन स्टाम्प 12 KGS/ACRE	- DO -
4.	नोमिनी गोल्ड	120 ML / ACRE S.C. 22-25 दिन बाद, नमी होने पर

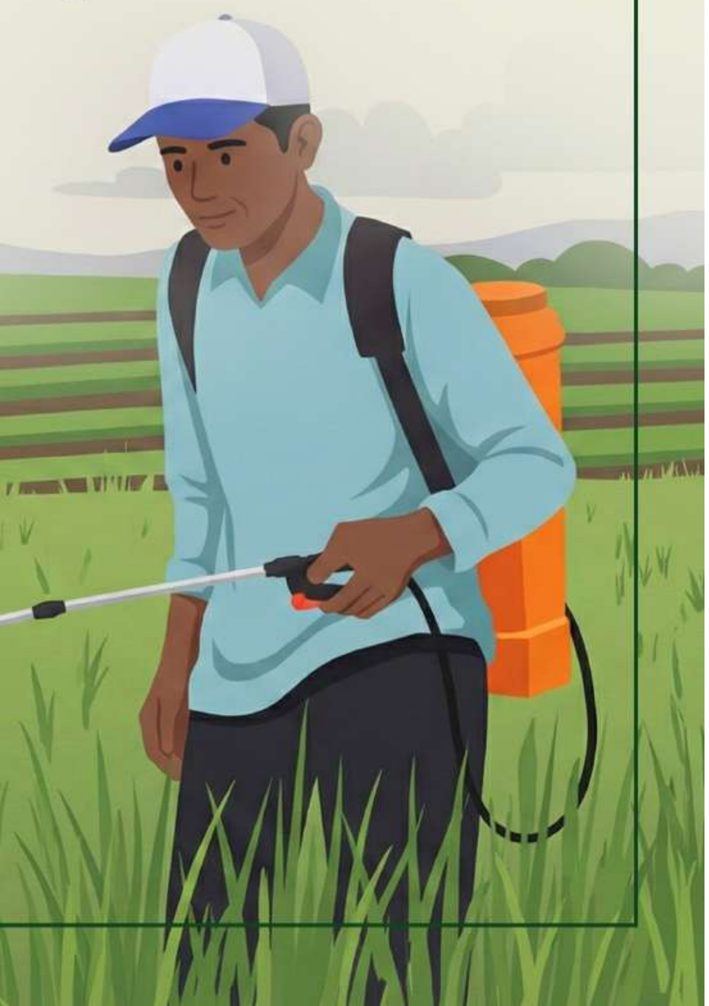

सिंचाई :-

धान की उत्तम फसल लेने के लिये वृद्धि काल में पानी भरा रहना चाहिए और प्रति सप्ताह नया पानी देना चाहिए इस प्रकार 15-20 पानी पर्याप्त है। कटाई से एक हप्ता पहले सिंचाई बन्द कर दें।

बीमारियाँ :-

धान में पद गलन FOOT ROT - बकानी

(क) बकानी :- कुछ पौधे स्वस्थ पौधों की अपेक्षा 5-6 इंच ऊँचे हो जाते हैं। यह इस बीमारी में उत्पन्न जिब्रेलिक एसिड के कारण होता है। रोग ग्रस्त पौधों की रोपाई न करें और खेत से रोग ग्रस्त पौधों की छंटाई करें बीज उपचारित बोयें। बीजोत्पादन में धान (PADDY) का बन्ट छोड़कर कोई आपत्ति जनक रोग नहीं है क्योंकि भारतीय न्यूनतम बीज प्रमाणीकरण मानकों में बकानी का कोई मानक नहीं है अतः बीज में बकानी की उत्पत्ति के लिये बीज उत्पादक उत्तरदायी नहीं है परन्तु फिर भी बीज व्यापारी कृषक को इस व्याधि से हानि न हो बीजोपचार करते हैं और अनेकों उपचार बताते हैं।

बीमारियाँ :-

(ख) बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट :- पत्ती पीली होकर सूख जाती है पहले गोय सूखती है सहनशील किस्में लगायें।

(ग) आभाषी कन्डुआ - FALSE SMUT, HALDIYA रोग :- कुछ दानों में होता है प्रभावित दाने फटने पर हल्दी जैसा पदार्थ निकलता है। 500 ग्राम COC प्रति एकड़ 200 ग्राम पानी में छिड़कें ।

बीमारियाँ :-

(घ) कीट :- जड़ की सुन्डी 10 KG कार्बोरिल डस्ट या 250 ग्राम डाइक्लोरोवास 200 लीटर पानी में छिड़काव करें।

(ङ) गंधी बग – मच्छर :- मलगां:- 10 KG / एकड़ मिथाईल पैराथियान 2% डस्ट ।

"इस पत्रक म फसल उत्पादन की जानकारी कम्पनी क अपन अनुसन्धान फाम, अन्य प्रगातशाल कृषका के अनुभव, कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विदों से प्राप्त जानकारी पर हरियाणा पंजाब के लिये है। विभिन्न राज्यों की भूमि, जलवायु भिन्न-भिन्न है अतः कृषक उत्तम ही नहीं उत्तमोत्तम फसल लेने के लिये स्थानीय विश्वविद्यालयों, कृषि अधिकारियों, कृषि विज्ञान केन्द्रों, कृषि ज्ञान केन्द्रों तथा प्रगतिशील कृषकों से सलाह कर उन्नत कृषि शष्य क्रियायें अपनाएं।"